AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पत्थरों में जाट–राजपूत विरासतः राजस्थान के डीग महल की वास्तुकला की भव्यता

महेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
यूनिवर्सल पीजी कॉलेज(महवा) दौसा राजस्थान
Mjatradha@gmail.com

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

अमूर्त

भरतपुर, राजस्थान में अपने जाट शाही राजाओं और उनके साम्राज्य के लिए प्रसिद्ध है, जो हाल ही तक इस छोटे से राज्य पर शासन करते थे। दीग, जो यहां से 32 किलोमीटर दूर एक शहर है, ने बहुत पहले ही अपनी महिमा प्राप्त की और यहां एक विशाल रॉयल महल है, जिसे 1970 तक इसके वैध उत्तराधिकारियों द्वारा सुंदर रूप से प्रबंधित किया गया था और आंशिक रूप से बसाया भी गया था। दीग उस समय जाट शासकों का गौरव था। दीग महल जाट शासकों की एक जीवित गवाही है, जिन्होंने मुगलों और मराठों के आक्रमणों का बहादुरी से सामना किया था। एक ऐतिहासिक युद्ध में, लगभग 80,000 सैनिकों वाली दो सेनाओं को स्थानीय सेना ने राजा सूरज मल के नेतृत्व में हराया था। जब राजा सूरज मल भरतपुर चले गए और उसे अपनी राजधानी बना लिया, तो दीग साम्राज्य में दूसरी जगह पर चला गया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि अधिकांश पत्थर मुगली इमारतों से लूटकर दीग महल में उपयोग किए गए थे, जो उनकी जीत के बाद किया गया था। चूंकि भरतपुर और आगरा पास में थे, इन स्थानों का विकास शासकों और उनके शासन को प्रभावित करता था। राजनीतिक दबाव और ईर्ष्या के कारण दीग कई बार शत्रु सेनाओं का केंद्र बन गया था। परेशान होकर, शाही परिवार ने अपनी दिन–प्रतिदिन की गतिविधियाँ भरतपुर स्थानांतरित कर दीं। लोगों का मानना है कि दीग महल और उसका परिसर मुगली वास्तुकला से प्रभावित है और शासकों ने समकालीन डिजाइनिंग की भावना को अपनाने की कोशिश की। दूसरों का कहना है कि दीग महल एक आकर्षक और वास्तुकला से समृद्ध इमारत है, जो समकालीन युग को दर्शाती है, लेकिन इसमें अपनी अलग पहचान भी है।

कीवर्ड: *इतिहास, अध्ययन, डीग पैलेस, राजस्थान*

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

परिचय

राजस्थान अपने अद्भुत स्थलों के लिए प्रसिद्ध है और आश्चर्यजनक रूप से यहाँ इतने सारे स्थल हैं। इस अद्भुत राज्य में यात्रा करते समय, कभी–कभी आप किसी ऐसे अनोखे शहर या गाँव में पहुँच जाते हैं जो आपकी इंद्रियों को शांति प्रदान करता है। दीग उन शहरों में से एक है, जिनका गाइड बुक्स में बहुत विस्तार से उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन यह सभी इतिहास की किताबों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दीग अपने विशाल किले और शानदार महल के लिए जाना जाता है, जो सुंदर झीलों से घिरा हुआ है। ये झीलें आज भी शहर में पानी का मुख्य स्रोत हैं। दीग राजस्थान के जाट साम्राज्यों में से एक था और आगरा और दिल्ली के निकट होने के कारण इसे कई उतार–चढ़ावों का सामना करना पड़ा और कई बाहरी आक्रमणों का बोझ भी उठाना पड़ा।

दीग (27°25श अक्षांश, 77°15श देशांतर), जो राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित है, ऐतिहासिक रूप से जाट शासकों का अठारहवीं सदी का मजबूत गढ़ के रूप में जुड़ा हुआ है। बादल सिंह (1722 दृ 1756 ई.) ने गद्दी संभालने के बाद जनजाति का नेतृत्व मजबूत किया और इस प्रकार भरतपुर में जाट घराने के वास्तविक संस्थापक बन गए। दीग के शहरीकरण की शुरुआत का श्रेय भी उन्हें जाता है। यह उन्हीं का निर्णय था कि उन्होंने दीग को अपनी नई स्थापित जाट राज्य की मुख्यालय के रूप में चुना।

दीग सामान्यतः भरतपुर, मथुरा या आगरा जाने वाले यात्रियों के लिए एक दिन की यात्रा होती है। दीग भरतपुर से 36 किमी दूर अलवर सड़क पर स्थित है। भरतपुर से दीग के लिए नियमित बसें चलती हैं (अलवर जाने वाली सभी बसें दीग पर रुकती हैं)। भरतपुर से दीग पहुंचने में लगभग 1 घंटा लगता है (सड़क की खराब स्थिति के कारण)।

दीग महल का बाग इतना बड़ा, सुंदर और दृष्टि को शांति देने वाला है कि मुगल शैली का चारबाग बागीचा इसके मुकाबले कहीं नहीं ठहरता। बाग की डिजाइन, वास्तुकला, लैंडस्केपिंग और स्थान सभी निर सिंसमे हैं। मध्य में रास्ते, दो जलाशय और पेड़ों, जड़ी–बूटियों और घास की घेराबंदी सभी अच्छी तरह से सोची–समझी लगती हैं। जाली, झरोखे, द्वारों और पत्थर और संगमरमर का प्रयोग यह दर्शाता है कि उस समय के प्रचलित राजस्थानी वास्तुकला की शैली को अपनाया गया था।

केशव भवन, जो महल का मानसून दरबार था, मानव निर्मित तालाब के पास स्थित है, जो जल संचय का काम करता है और इमारत और पर्यावरण को ठंडक प्रदान करता है। महल के विभिन्न कोणों से जलाशय का दृश्य बेहद सुंदर लगता है। कुछ विशेष दर्शक दीर्घाएँ राजस्थानी शैली में डिजाइन की गई हैं, जो विशाल तालाब को दृश्यात्मक रूप से बढ़िया प्रभाव प्रदान करती हैं। महल में विभिन्न प्रकार के

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

फव्वारों की कतार है, जो सौंदर्यात्मक रूप से आकर्षक लगती है और समकालीन फव्वारे डिजाइनों से कम नहीं हैं। कहा जाता है कि राजा ने यह व्यवस्था की थी कि जब फव्वारे चालू होंगे, तो पानी इस तरह छिटकेगा कि किसी को बारिश का अहसास होगा। इसके अलावा, फव्वारों में जो तकनीक अपनाई गई थी, वह ऐसी थी कि कृत्रिम बारिश का अनुभव करते हुए प्राकृतिक आकाशीय गरज की आवाज भी सुनाई देती थी।

दीग भवन, जिसे जल महल के नाम से भी जाना जाता है, का निर्माण शासकों महाराजा सूरजमल (1756–63 ई.) और जवाहर सिंह (1764–68 ई.) ने बंसी पहारपुर के गुलाबी रंग के बलुआ पत्थर से कराया था। इन भवनों में गोपाल भवन, जिसमें दो फ्लैंकिंग मंडप – सावन और भादो, सूरज भवन, हरदेव भवन, किशन भवन, केशव भवन, नंद भवन, सिंह पोल, केंद्रीय बाग और तालाब – गोपाल सागर और रूप सागर शामिल हैं। वास्तुकला मूल रूप से ट्रेबेट आदेश की है, लेकिन कुछ मामलों में सटीक प्रणाली का उपयोग भी देखा जा सकता है। सामान्य विशेषताएँ हैं – सजीले स्तंभों पर आधारित अंकित मेहराब, हाइपोस्टाइल हॉल, समतल छतें, बालकनियाँ और बंगाली छतों वाले मंडप, आदि। अर्धवृत्ताकार त्रिकोणीय और नुकीली मेहराबें भी देखी जाती हैं। गोपाल सागर के पार कच्चा बाग शाही बाग के रूप में कार्य करता था। पूर्व शासकों की वस्तुएँ गोपाल भवन और किशन भवन के अंदर प्रदर्शित की जाती हैं। यह महल अपने रंगीन फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है, जो अब भी साल में दो बार चलते हैं।

सूरज भवन, जो सूरजमल, जाट राजा (1756–63 ई.) के नाम पर रखा गया है, एक सुंदर एकमंजिला संगमरमर का भवन है, जिसकी छत सपाट है। यह भवन शाहजहाँ की संरचनात्मक कृतियों की याद दिलाता है और कुछ प्रारंभिक मुगल इमारतों से बहुत मिलता–जुलता है। कुछ नए सामग्री के बावजूद, इसके दीवारों में प्रयुक्त संगमरमर की चादरें मुख्य रूप से मुगल काल की विभिन्न इमारतों से आई हैं, क्योंकि ये आकार और बनावट में भिन्न–भिन्न हैं। यदि हम इसके रास्तों, इसका आधार, और पश्चिमी चेहरे के प्रमुख हिस्से, इतंबामजे और लाल बलुआ पत्थर में बने छज्जों को देखें, तो कहा जा सकता है कि इस संरचना को घेरने का विचार बाद में आया था।

बरामदे में पाँच मेहराबदार उद्घाटन और कोनों पर कमरे हैं, जिनमें एक केंद्रीय टैंक है जिसमें जलधाराएँ हैं, जिन्हें इमारत को सुंदर बनाने के लिए योजना बनाई गई थी। केंद्रीय अपार्टमेंट के दादो को बेहतरीन इनले कार्यों से घेरा गया है। सूरज भवन का आंतरिक हिस्सा एक मंडप जैसा है, जो शायद महिलाओं के विश्राम स्थान के रूप में काम करता था।

हारदेव भवन की स्थिति और इस भवन की व्यवस्था से यह प्रतीत होता है कि यह मुख्य भवन का मूल हिस्सा नहीं था और शायद सूरजमल (1753–63 ई.) द्वारा अपनी पसंद और आवश्यकताओं के अनुसार

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

बाद में जोड़ा गया था। मुख्य दक्षिणी खंड दो मंजिला है, जबकि निचली मंजिल में एक अग्रभाग वाला केंद्रीय हॉल है, जो दोहरी स्तंभों की पंक्ति से निकली मेहराबों से सुसज्जित है। एक मेहराबदार कॉलोनेड सामने की मेहराबों के पीछे चार स्तंभों के भीतर तीनों ओर चलता है। हॉल के पिछले हिस्से में एक लंबा गलियारा है, जिसके दोनों छोरों पर ऊँची मंजिल है, जो कुछ हद तक सूरज भवन के समान है। हॉल के दोनों ओर एक बरामदा और कोशिकाओं से घिरा एक आयताकार कक्ष बनाया गया है, जबकि पूर्व में एक आरामदायक रैंप ऊपरी मंजिल तक पहुंच प्रदान करता है। छत का पिछला भाग भवन को एक सुंदर छत्री से सजाता है, जिसका छत उभरे हुए स्पाइक वाले झुके हुए रूप में है, और उसके साथ छोटे गुंबद बने हुए हैं।

साहित्य की समीक्षा

लालवानी, एन. (2015) सांस्कृतिक धरोहर एक स्वचालित एकता की भावना प्रदान करती है और हमें पिछले पीढ़ियों को समझने और यह जानने में मदद करती है कि हम कहां से आए हैं। किले और महल सांस्कृतिक धरोहर के सबसे अच्छे उदाहरण हैं। वे हमारे गौरवमयी अतीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे हजारों सालों के सुनहरे ऐतिहासिक युग के जीवित गवाहों की याद दिलाते हैं। वे साहस के प्रतीक हैं, विकास के साक्षी हैं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का प्रतीक हैं। गोल्डन ट्रायंगल भारत के सबसे आकर्षक पर्यटन सर्किटों में से एक है। गोल्डन ट्रायंगल, जो राजस्थान में स्थित है, चार जिलों से मिलकर बनता है, जिनमें जयपुर, अलवर, भरतपुर और दौसा शामिल हैं। राजस्थान का गोल्डन ट्रायंगल क्षेत्र एक गौरवमयी इतिहास रखता है। यह क्षेत्र दुनिया भर में अपने शानदार किलों और महलों के लिए प्रसिद्ध है, जो राजाओं ने पहले के समय में बनवाए थे। ये राजस्थान की वास्तुकला धरोहर का आदर्श उदाहरण हैं। राजस्थान का गोल्डन ट्रायंगल क्षेत्र, जो दुनिया का प्रसिद्ध पर्यटन केंद्र है, हर साल पंद्रह लाख से अधिक पर्यटकों द्वारा दौरा किया जाता है। हमारी धरोहर हमारा गर्व है। हम सभी का कुछ कर्तव्य है कि इसे सुरक्षित और संरक्षित रखें ताकि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए बची रहे। क्योंकि किले और महल इस क्षेत्र के प्रमुख आकर्षण हैं, इनका संरक्षण और नवीनीकरण अनिवार्य हो जाता है। धरोहर का संरक्षण और सुरक्षा हमारी सामुदायिक संपत्ति में निवेश है, जो हमें आज पुरस्कृत करता है और भविष्य पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य संसाधन छोड़ता है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा आर्थिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है।

बर्गर, ए. ए. (2017) धरोहर का संरक्षण और सुरक्षा हमारी सामुदायिक संपत्ति में एक निवेश है, जो हमें आज पुरस्कृत करता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य संसाधन छोड़ता है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा आर्थिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है। किले और महल सांस्कृतिक

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

धरोहर के सबसे अच्छे उदाहरण हैं। वे हमारे गौरवमयी अतीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारी धरोहर हमारा गर्व है। हम सभी का कुछ कर्तव्य है कि इसे सुरक्षित रखें और आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें। जयपुर जिला भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यह दिल्ली–आगरा–जयपुर के प्रसिद्ध श्गोल्डन ट्रायंगलश का एक प्रमुख गंतव्य है। जयपुर जिला (राजस्थान राज्य की राजधानी) भारत के एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है, जहां घरेलू और विदेशी पर्यटक दोनों आते हैं। चूंकि किले और महल इस क्षेत्र के प्रमुख आकर्षण हैं, इनका संरक्षण और सुरक्षा अनिवार्य हो जाती है। किलों और महलों का संरक्षण और संरक्षण हमारे इतिहास को जीवित रखता है, जिससे इस क्षेत्र में पर्यटकों की आमद बढ़ जाती है। इस शोध पत्र में जयपुर जिले की सांस्कृतिक धरोहर की समृद्धि को किलों और महलों के संदर्भ में दिखाने और इन किलों और महलों के संरक्षण के कार्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक डेटा पर आधारित है।

बत्रा, डी., और शर्मा, एस. (2019) राजस्थान राजाओं और महाराजाओं की भूमि है। जब से जातीय लोग राजस्थान के क्षेत्रों में बसे, जो थार रेगिस्तान से लेकर अरावली पहाड़ियों तक फैले हुए हैं, तब से वहां उपलब्ध पौधों, जानवरों और उनके उत्पादों का उपयोग और सेवन शुरू हुआ और धीरे–धीरे यह आज के जातीय खाद्य संस्कृति के रूप में विकसित हुआ। खाद्य संस्कृति पारंपरिक ज्ञान और पीढ़ियों के अनुभवों के परिणामस्वरूप विकसित हुई है, जो कृषि–जलवायु परिस्थितियों, जातीय प्राथमिकताओं, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं पर आधारित है। चपाती–दाल–तरकारी–आचार (रोटी– दाल– सब्जी– अचार) हर घर में रोज का भोजन होता है, इसके बाद दूध उत्पादों और मांस का सेवन पर्यटकों द्वारा किया जाता है, जो उपलब्धता और धार्मिक वर्जनाओं के आधार पर होता है। राजस्थान की पाक कला खाद्य उत्पादन के स्वरूप में परिलक्षित होती है। खेती विभिन्न कृषि प्रणालियों का एक प्रमुख घटक है। रेगिस्तान की विविधता और वर्षा के आधार पर मुख्य कृषि फसलें मक्का, बाजरा, गेहूं, काई बेर, संगरी बीन्स, जौ, सब्जी, आलू, मूंगफली और मौसम की विभिन्न सब्जियाँ होती हैं। राजस्थान भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है, जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के पर्यटकों को आकर्षित करता है। राजस्थान ऐतिहासिक किलों, महलों, कला, संस्कृति और खाद्य के लिए पर्यटकों को आकर्षित करता है। भारत आने वाले हर तीसरे विदेशी पर्यटक का राजस्थान दौरा करता है, क्योंकि यह भारत आने वाले पर्यटकों के लिए गोल्डन ट्रायंगल का हिस्सा है। राजस्थान ने 2016–2017 के दौरान कुल विदेशी पर्यटकों का 14 प्रतिशत आकर्षित किया, जो भारतीय राज्यों में चौथे स्थान पर है। यह घरेलू पर्यटकों के बीच भी चौथे स्थान पर है। यह पत्र एक नई रणनीति की जांच करता है, जो पर्यटन और खाद्य उद्योग के बीच इनपुट–आउटपुट लिंक को बढ़ाकर संकटग्रस्त पर्यटन अर्थव्यवस्था में वृद्धि को बढ़ावा देता है। पाक–पर्यटन आतिथ्य उद्योग में एक बढ़ता हुआ खंड है, जो

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पारंपरिक खाद्य पर अधिक निर्भर है, ताकि वास्तविक यात्रा करने वाले पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके।

सेनगुप्ता, ए. (2022) भारत एक विविधतापूर्ण देश है, जहां संस्कृति और परंपराओं के मामले में हर सौ किलोमीटर पर भाषा, मुख्य आहार, पहनावा आदि बदल जाते हैं। भारतीय भोजन 5000 सालों के इतिहास से प्रेरित है, जिसमें विभिन्न समूहों और संस्कृतियों का योगदान रहा है, जो उपमहाद्वीप से जुड़ी हुई थीं, और इससे आधुनिक भारत में मिलने वाले स्वादों और क्षेत्रीय व्यंजनों की भरमार हुई है। भारतीय भोजन उन सभी मसाले प्रेमियों को खुश करने का आश्वासन देता है, जो दुनिया भर में भारतीय मसालों का मिश्रण पसंद करते हैं। इस प्रकार, राजस्थान, जो विदेशी पर्यटकों के आगमन का मुख्य केंद्र है, के पास पाक–पर्यटन को अपने सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन के साथ समान स्तर पर बनाने और बनाए रखने की सबसे अधिक संभावना है। जहां तक सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता बढ़ाने की बात है, एक विशेष सांस्कृतिक स्थल पर आने वाले पर्यटक मुख्य रूप से पाक तरीकों से अपनी सांस्कृतिक अनुभव को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इस संदर्भ में, विशेष रूप से उन पर्यटन स्थलों के विश्लेषण में, जो संस्कृति और धरोहर से जुड़े होते हैं, पाक कला और उसका पर्यटन से संबंध एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया है। इस प्रकार, आजकल हर राज्य की पर्यटन नीति ने अपने स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है, ताकि पर्यटकों को स्थानीय सांस्कृतिक अनुभव मिल सके। पाक–पर्यटन का यह निरंतर विकास सबसे अद्भुत है और यदि इसे सही तरीके से विकसित किया जाए तो यह अन्य प्रकार के पर्यटन के मुकाबले सबसे बड़ा राजस्व अर्जित करने वाला उत्पाद बन सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डीग महल को परिभाषित करने वाले वास्तुकला तत्वों का अन्वेषण करना, जिसमें जाट और मुगल डिजाइन के प्रभावों का अद्वितीय मिश्रण है।
2. राजस्थान में जाट शासन के संदर्भ में डीग महल का ऐतिहासिक महत्व विश्लेषण करना, विशेष रूप से राजा सूरज मल और अन्य जाट शासकों के योगदान पर ध्यान केंद्रित करना।
3. महल के बागों, फव्वारों और संरचनाओं की सांस्कृतिक और कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन करना, और उन्हें समकालीन मुगल डिजाइनों, विशेष रूप से चारबाग योजना से तुलना करना।
4. डीग महल में उपयोग किए गए वास्तुकला तत्वों के प्रतीकात्मक और कार्यात्मक पहलुओं की जांच करना, जिसमें जल निकायों, फव्वारों और वर्षा मंडपों जैसे केशव भवन का उपयोग शामिल है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन किशन भवन, केशव भवन, नंद भवन और गोपाल भवन की वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान विधियों का उपयोग करता है, जो डीग महल परिसर के भीतर स्थित हैं। यह अनुसंधान वास्तुकला की विशेषताओं, स्थानिक व्यवस्थाओं और ऐतिहासिक संदर्भ का प्रत्यक्ष अवलोकन और विश्लेषण पर केंद्रित है। विधि में निम्नलिखित कदम शामिल हैं–

❖ डेटा संग्रहण विधियाँ

- ***साइट विजिट और अवलोकन–*** प्राथमिक डेटा डीग महल परिसर के चयनित भवनों दृ किशन भवन, केशव भवन, नंद भवन और गोपाल भवन दृ की स्थल पर विजिट करके एकत्र किया जाएगा। भवनों के वास्तुकला डिजाइन, संरचना, सजावटी तत्वों और कार्यात्मक पहलुओं का विश्लेषण करने के लिए स्थल पर विस्तृत अवलोकन किया जाएगा।
- ***फोटोग्राफी और स्केचिंग–*** साइट विजिट के दौरान, प्रत्येक भवन के डिजाइन, लेआउट और अद्वितीय वास्तुकला विशेषताओं का दस्तावेजीकरण करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली फोटोग्राफी और स्केच बनाए जाएंगे। यह दस्तावेजीकरण विश्लेषण का आधार बनेगा।
- ***वास्तुकला सर्वेक्षण–*** प्रत्येक भवन के आयाम, लेआउट और डिजाइन की विशेषताओं का सर्वेक्षण किया जाएगा, जिसमें स्थान का उपयोग, अलंकरण, सामग्री और संरचनात्मक अखंडता पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

डेटा विश्लेषण

❖ किशन भवन

भवन के मेहराब एक बड़े हॉल से जुड़ते हैं, जो कुछ मायनों में गोपाल भवन के मुख्य हॉल जैसा है। मध्य और सामने के मेहराबों के स्पैण्डरेल्स को मोटी नक्काशीदार अरबी डिजाइनों से सजाया गया है, जबकि पीछे की दीवार में एक उभरी हुई बालकनी है, जिसकी सामने की ओर नक्काशी की गई है। पत्तेदार छत जैसे वक्राकार छत, जिसमें नाजुक सजावटी विवरण हैं, काफी प्रभावशाली है। हॉल के पीछे की ओर एक लंबा गलियारा है, जिसमें ऊंची मंजिल है और इसके दोनों ओर एक छोटी सी कोठरी और एक कमरा है। भवन के दक्षिणी हिस्से में स्थित मेहराबदार मंडप को राजा बलवंत सिंह (ए.डी. 1726–53) द्वारा बाद में जोड़ा गया माना जाता है। भवन अपनी विस्तृत पैनलयुक्तथ्बंकम और छत पर स्थित तेरह फव्वारों वाले आकर्षक टैंक के साथ एक अद्भुत संरचना है, जो अठारहवीं शताब्दी की है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

❖ **केशव भवन**

यह एकमंजिला महल, जिसे सामान्य रूप से बरादरी कहा जाता है, अग्रणी अर्धआठकोणीय कोनों पर स्थित है, जो मुगल संरचनाओं के कोने के मीनारों या मीनारों के आधारों के पैटर्न को याद करता है। इसके प्रत्येक चेहरे में पांच प्रतिष्ठित मेहराब हैं, जो इसे बाहरी रूप से सजाने के लिए प्रकाश के लिए ऊर्ध्वाधर चेंहमे के रूप में कार्य करते हैं। केंद्रीय रूप से, इस भवन को चारों ओर एक मेहराब द्वारा विभाजित किया गया है, जो एक आंतरिक वर्ग बनाता है, जिसे बाहरी वर्ग से 0.91 मीटर चौड़ी नहर द्वारा अलग किया गया है। नहर को छोटे जेट्स की एक सीमा से सजाया गया है और इसके मध्य में एक श्रृंखला में फव्वारे भी हैं। ऊपर मेहराबों में पाइपों से पानी छोड़े जाने पर वर्षा का दृश्य उत्पन्न होता था, जबकि दबावयुक्त पानी से घूमते हुए पत्थर के गोले आंधी की आवाज पैदा करते थे।

❖ **नन्द भवन**

यह भवन एक विशाल आयताकार हॉल से बना है, जो एक ऑडिटोरियम जैसा दिखता है, जिसे सात उद्घाटन वाली भव्य मेहराब और लंबी और छोटी दीवारों वाले पंखों से घेरा गया है। एक केंद्रीय मेहराब, जो आयताकार पैटर्न में व्यवस्थित है, हॉल को अंदर और बाहर के खंडों में विभाजित करता है। इस मंडप के प्रत्येक किनारे पर स्थित पंख में एक ऊंची मंजिल है, जो आपस में जुड़े हुए कक्षों से ढकी हुई है, जिनकी दीवारों पर अलंकृत बालकनियाँ हैं। संभवतः बालकनियों और आधारों में इस्तेमाल सामग्री दिल्ली से लायी गई थी, जो लूट का हिस्सा थी। जाट राजाओं द्वारा हॉल के केंद्रीय भाग की छत लकड़ी की है, जो दिल्ली के दीवान–ए–खास की छत के पैटर्न पर डिजाइन की गई है। पहले की लकड़ी की छत को 1867 में लोहे की गर्डरों से बदल दिया गया था और हॉल में कुछ और पियर्स बनाए गए थे ताकि इसके और अधिक ढहने से बचाया जा सके।

गोपाल भवन

गोपाल भवन, जिसे समतल छत से सजाया गया है, सूरज मल (ई.स. 1756–63) द्वारा बनवाया गया था और यह तीन प्रमुख भागों में बंटा हुआ है, अर्थात, एक मध्य और दो पार्श्व भाग। यह भवन मुख्य रूप से दो मंजिला है, लेकिन कुछ हिस्सों में इसमें तीन और चार मंजिलें भी हैं। पूर्वी मुखौटा इस महल को उसकी भव्य मेहराबों और सुंदर रूप से उकेरे गए प्रभावशाली खंभों से सजाता है। शाही स्वागत कक्ष, जिसकी अल्कोव बैक वॉल की मोटाई में है, शाहजहाँ के दीवान–ए–आम जैसा प्रतीत होता है। भव्य कक्ष के सामने एक छोटा आयताकार कक्ष पश्चिमी प्रक्षिप्ति बनाता है, जो वर्तमान में तीन ओर से मेहराबों से घिरा हुआ है। पार्श्व पंख, जिसमें एक सामने और एक पीछे कक्ष हैं, एक केंद्रीय गलियारा और दोनों ओर विभिन्न आकार के कमरे हैं, जो शायद आवासीय उद्देश्य के लिए शुरू किए गए थे। उत्तरी पंख का कक्ष

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

काले संगमरमर का एक सिंहासन समेटे हुए है और दक्षिणी पंख का कक्ष सफेद संगमरमर का है। ये शायद दिल्ली के सम्राट महलों से जवाहर सिंह (ई.स. 1764–68) द्वारा लाए गए थे। भवन का पश्चिमी हिस्सा गोपाल सागर के समीप होने के कारण अत्यधिक चित्रमय प्रभाव प्राप्त करता है, जो इसके ऊपर झूलते हुए गुंबदों और पक्षी के आकार की बालकनियों को दर्शाता है। मुख्य महल को उत्तर और दक्षिण की ओर से दो अलग–अलग मंडपों द्वारा घेर लिया गया है, जिन्हें श्सावनश (जुलाई–अगस्त माह) और श्भादोंश (अगस्त–सितंबर माह) कहा जाता है। इनमें से प्रत्येक दो मंजिला है और इसके आकर्षक झोपड़ी के आकार की छत पर एक पंक्ति में सुई जैसी चोटियाँ हैं।

जाट शासक मुगल दरबारों की भव्यता से प्रभावित थे। बागों का डिजाइन मुगल चारबाग से प्रेरित था। महल एक चौकोर आकार में है, जिसमें एक बाग और रास्ते बीच में हैं। सजावटी फूलों के बेड, झाड़ियाँ, पेड़ और फव्वारे गर्मी के दौरान स्थान को काफी ठंडा करते हैं। दो विशाल जलाशय, गोपाल सागर और रूप सागर, जो दोनों ओर स्थित हैं, तापमान को कम करने में मदद करते थे।

मुगल संरचनाओं से आयी शानदार जालीदार गेट, पत्थर की स्लैब्स, अलंकरण वाली बीम और संगमरमर की जालियाँ महल में इस्तेमाल की गई हैं। एक सुंदर संगमरमर का झूला, जो कहा जाता है कि नूरजहाँ का था, मुगल दरबार से युद्ध के खजाने के रूप में लाया गया था। यह झूला बागों को देखता है।

केशव भवन, जो एक मानसून मंडप है, एकल–मंजिला बारादरी है जो अष्टकोणीय आधार पर स्थित है। यह रूप सागर तालाब के पास स्थित है। इस संरचना में प्रत्येक तरफ पांच मेहराबें हैं जो इसे कई भागों में विभाजित करती हैं। एक आर्केड मंडप के अंदर एक नहर के ऊपर चलता है, जिसमें सैकड़ों फव्वारे हैं। नहर की दीवारों में सैकड़ों छोटे जल जेट्स लगे हुए हैं। बैल बड़े चमड़े के ष्बाल्टीष् के साथ पानी खींचने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे, जो एक जटिल पुली प्रणाली के माध्यम से तालाब तक पानी लाते थे।

होली जैसे त्योहारों के दौरान, पानी में रंग मिलाए जाते थे। छोटे कपड़े के बैग में जैविक रंग भरकर उन्हें जलाशय की दीवार में बने छेदों में हाथ से डाला जाता था। जब पानी इन छेदों से बहता और पाइपलाइन के जटिल नेटवर्क से गुजरता, तब फव्वारे रंगीन पानी छोड़ते थे।

फव्वारे की छींटें और जेट्स एक मानसून जैसी वातावरण का निर्माण करते हैं, जिसे एक अद्वितीय तकनीक द्वारा और बढ़ाया जाता है, जो मंडप के चारों ओर गरज जैसी आवाज पैदा करती है। छत के चारों ओर चौनल में रणनीतिक रूप से रखे गए सैकड़ों धातु की गोलियाँ पानी के दबाव से घुमाई जाती हैं, जिससे गरज जैसा प्रभाव उत्पन्न होता है। एक रेगिस्तानी शहर में यह वातावरण जाट राजाओं और रानियों के लिए महत्वपूर्ण रहा होगा।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

राजा का शयनकक्ष एक विशाल काले ग्रेनाइट के बिस्तर से सुसज्जित है। यह कभी पारसी मृत्यु संस्कार का हिस्सा था, जो मृत शरीरों को धोने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता था।

किला भरतपुर राज्य के राजा बादन सिंह द्वारा 1730 ईस्वी के आसपास बनवाया गया था। किला अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण महत्वपूर्ण था और यह व्यापार का केंद्र भी था। 18वीं सदी के मध्य में यह किला अफगान आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली के कब्जे में था, लेकिन कुछ महीनों के बाद यह फिर से अनलड़ाई स्थिति में रहा। महाराजा सूरज मल ने इस किले में एक विशाल तोप रखवाई थी, जो आगरा के किले से लाई गई थी। यह किला युद्ध के दौरान रॉयल परिवार का निवास स्थान था। एक समय में यह शाही संरचना था, लेकिन अब दीग किला सिर्फ खंडहर और अवशेषों का समूह बनकर रह गया है, जो एक झील से घिरा हुआ है। यह लगभग 1 किमी के दायरे में है और विभिन्न दिशाओं में 3–4 तोपें रखी गई हैं। किले के परिसर में बुरी तरह से जर्जर हो चुकी इमारतों के बावजूद, यहाँ कुछ शानदार मंदिर, बावड़ियाँ और वास्तुकला के नमूने हैं। जब हम उस वीरान किले का अन्वेषण कर रहे थे, तो हम एक ऐसी इमारत तक पहुँचे, जो अब तक देखी गई सबसे रोचक पुरातात्विक साइट थी। यह एक भूमिगत इमारत थी (लगभग 4 मंजिलें नीचे)। उस इमारत की छत पर सूर्य की रोशनी के लिए छेद थे और ऐसा लगता था कि वहाँ बहुत समय से कोई नहीं आया था। हम सीढ़ियों से नीचे उतरे और इमारत के नीचे तक पहुंचे। वर्तमान में, दीग पैलेस भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित किया जाता है और यह राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारकों की श्रेणी में आता है। अगर कोई पैलेस और उसके संग्रहालय का दौरा करता है, तो वह राजा और उनके परिवारों के फर्नीचर और वस्तुएं देख सकता है, जो उनके मूल रूप में संरक्षित हैं। सोफा सेट, कुर्सियाँ, बिस्तर के अलावा, कोई कमरे को ठंडा करने की तकनीक भी देख सकता है, जिसे मानव बल से खींचा जाता था।

निष्कर्ष

दीग पैलेस की वास्तुशिल्पीय भव्यता जाट शासकों की समृद्ध विरासत का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, जो मुगल और राजस्थानी शैलियों के तत्वों को मिलाकर एक अद्वितीय और दृश्य रूप से आकर्षक संरचना बनाती है। महल न केवल राजा सूरज मल के तहत जाट वंश की भव्यता को दर्शाता है, बल्कि उस समय की गहरी सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों को भी उजागर करता है। स्थानीय पत्थर का रणनीतिक उपयोग और मुगल–प्रेरित तत्वों का समावेश यह दर्शाता है कि शासकों की महत्वाकांक्षा आगरा और दिल्ली की सम्राटीय भव्यता से मुकाबला करने की थी। इसके अतिरिक्त, प्रसिद्ध फव्वारे और प्राकृतिक ध्वनियों के नवाचारपूर्ण उपयोग सहित जटिल जल प्रणालियाँ यह प्रदर्शित करती हैं कि वास्तुकला के प्रति गहरी समझ थी, जो सौंदर्यात्मक सुंदरता को व्यावहारिक उपयोगिता के साथ जोड़ती थी।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

दीग पैलेस अपने समय की ऐतिहासिक और वास्तुशिल्पीय महिमा का प्रतीक बना हुआ है, साथ ही यह सहनशीलता का भी प्रतीक है। कई आक्रमणों और राजनीतिक शक्ति में गिरावट का सामना करने के बावजूद, महल जाट राज्य की ताकत, इसकी वास्तुशिल्पीय कुशलता और राजस्थान के सांस्कृतिक परिदृश्य में इसकी स्थायी धरोहर का स्मारक बना हुआ है। महल की दीवारों के भीतर शाही भव्यता और कार्यात्मक डिजाइन का संयोजन यह भी दर्शाता है कि जाटों की सैन्य ताकत और उनके कुशल शहरी नियोजन और वास्तुकला की क्षमता दोनों का प्रभाव था।

निष्कर्षस्वरूप, दीग महल केवल एक शाही निवास नहीं है, बल्कि राजस्थान के उथल–पुथल भरे इतिहास, वास्तुशिल्पीय नवाचार और सांस्कृतिक विकास का एक जीवित दस्तावेज है, जो भारत के अतीत की जटिलताओं को समझने में एक महत्वपूर्ण संपत्ति बनाता है। महल आज भी इतिहासकारों, वास्तुकारों और आगंतुकों को अपनी सुंदरता और गहरी ऐतिहासिक महत्वता से आकर्षित करता है।

संदर्भ

- भट्ट नेहा (2015)। डीग पैलेसरू इसका रोमांस और आश्चर्य। नियोगी बुक्स, भारत। आईएसबीएन 9789383098538।
- कुमार भारत (2014)। डीग का जल महल और इसकी प्राचीन शावर तकनीक। एक्सिस पब। दिल्ली, पृष्ठ – 57
- सिंह अनिल (2009)। डीग, राजस्थान में जल महल की वास्तुकला, सुमित पब।, जयपुर, पृष्ठ–132
- कुमार राजीव (2008), जल महल डीग और मुगलों की वास्तुकला का तुलनात्मक अध्ययन, कृष पब भरतपुर, पृष्ठ–45
- बर्गर, ए. ए. (2017)। स्वर्ण त्रिभुजरू वर्तमान भारत का एक जातीय–लक्षणिक दौरा। रूटलेज।
- यादव, एम. (2017)। राजस्थान पर्यटनरू समस्याएं और सरकारी नीतियां। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 68–72।
- लालवानी, एन. (2015)। राजस्थान के स्वर्ण त्रिभुज क्षेत्र के किलों और महलों का स्थानिक विश्लेषण।
- गुप्ता, पी. (2019)। राजस्थान में पर्यटन उद्योग का विकास। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च (।श्रडत), 8(3), 114–118।
- बत्रा, डी., और शर्मा, एस. (2019)। राजस्थान की पाककला विरासतरू राजस्थान पर्यटन और अर्थव्यवस्था गहनता में इसकी भूमिका।

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:2
November 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

- पंवार, एन., और शर्मा, वी. (2017)। पर्यटन क्षमता का आकलनरू राजस्थान के अलवर जिले का एक केस स्टडी। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (प्श्रम्ज), 4(11), 189–196।
- चंदेल, आर.एस., और कांगा, एस. (2020)। पश्चिमी राजस्थान, भारत में इकोटूरिज्म का सतत प्रबंधनरू एक भू–स्थानिक दृष्टिकोण। जियो जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड जियोसाइट्स, 29(2), 521–533.
- कुमार, एम. (2022). कस्बा चुरूरू मध्यकालीन राजस्थान में एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र का उद्भव और विकास. राजस्थान इतिहास कांग्रेस में (पृष्ठ 107). कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.
- सेनगुप्ता, ए. (2022). राजस्थान में पर्यटन के विकास में पाककला की भूमिका. पर्यटन और आतिथ्य प्रबंधन में अनुसंधान, 112.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

महेश कुमार

*****